रात्रिक्लास 7-6-68 मौखिक पाठ शिव बाबा याद है?

म्युजियम में पूछते होंगे हम बाप से योग कैसे लगावें। मूल बात तो यही है। या परमात्मा से योग कैसे लगावें। ऐसे कोई नू पूछा? यह है मूल बात समझने की। और है भी भारत का प्राचीन योग मशहूर। मुंझते होंगे कि परमात्मा का क्या रूप है। बाप को हम कैसे समझें। यह मुख्य प्रश्न पूछते होंगे। समझाना है तुम आत्मा हो। आत्मा ही पतित बनी है पुकारती है। तुम से जरूर यह पूछते होंगे। मूल बात है बाप से योग कैसे लगावें तो तुमको कहना पड़ता होगा कि अपने को आत्मा समझो। न कि शरीर। पहले2 यह समझाना पड़े। हम सभी आत्माओं का बाप है परमात्मा। हम भाई2 हकदार हैं बाप के वर्से का। यह बातें जाती चलती है या और चित्रों पर हीसमझाते हो मुख्य बात रह जाती है। कठीन बात है यह। तुम्हारे लिए भी यह डिफीकल्ट है। जो तुम याद की यात्रा में ठहर नहीं सकते हो। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना। वही पतित पावन है। तो तुम पावन बनजायेंगे। सतयुग में निराकारी साकारी दोनो दुनियाएं पवित्र थी। अभी निराकारी दुनिया तो पवित्र है। बाकी यह है अपवित्र दुनिया। अभी सवाल है हम पतित से पावन कैसे बनें। भ्रष्टाचारी से श्रेष्ठाचारी कैसे बनें। यह जरूर कहेंगे रास्ता बताओ कि हम बाप के पास कैसे पहुंचें। भक्ति की जाती है भगवान को पाने। इस बात पर बच्चों को ले आना चाहिए। आड़ी की समझानी तो बहुत सहज है। पहले यह सिखाना चाहिए हम बाप के बच्चे हैं पावन बन पावन दुनिया के लायक कैसे बनें। यहां तो पावन एक भी नहीं। सर्व को पावन बनाने वाला एक ही बाप है। सभी आत्माओं को बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। यह याद कराना है। बेहद के बाप से डायरेक्ट कनेक्शन लगाना है। मूल बात ही है यह भ्रष्ट मनुष्य पावन कैसे बनें। रूह ही पवित्र अपवित्र बनती है। अभी तो कलियुग तमोप्रधान है। आयरन एजेड से गोल्डेन एजेड कैसे बनें। आधा कल्प पावनपना है। फिर पतित बनते हैं। यह है ईश्वरीय मिशन। हम ईश्वरीय परिवार हैं। सभी का बाप तो ईश्वर है ना। पहले2 ईश्वरीय परिवार जरूर चाहिए। जो बाप आकर पढ़ावें। फिर बन जाता है देवी परिवार। ईश्वर कैसे पढ़ाते हैं जो फिर ईश्वरीय परिवार देवी परिवार बन जाता है। फिर सीढ़ी उतरना होता है। पड़ा2 पूछते हैं बाप को कैसे याद करें। योग में कैसे रहें। हम आत्मा और बाप को याद कैसे करें। यह प्रश्न पूछते हो। तुम पावन बनेंगे ही बाप को याद करने से। पहली बात है ए बोलो पहले बाप को जानो। पावन बनने लिए बाप को याद करो। फिर और बातें तुम आपे ही समझ जावेंगे। तुम राजयोगी हो तो औरों को भी रास्ता बताना है। यह है मूल बात। बाकी और बातों से फायदा नहीं। एक की ही अव्यभिचारी याद चाहिए। साधु सन्त आद तो भक्ति मार्ग सिखलाते हैं। बाप खुद कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावेंगे। बाबा कहते हैं ब्रह्मा के आरगन्स द्वारा कहते हैं। ब्रह्मा कौन है यह क्लीयर कर लिखना है। भगवान कहते हैं तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। बाप ही बैठ कर समझाते हैं। बोलो मुख्य बात है बाप को याद करना। बाप से ही वरसा लिमेगा। किचड़ा निकल जावेगा। इस में खुशी होगी। तुम सभी इस में मुंझते हो। याद भूल जाते हो। भल नौकरी आद करते हो यह तो याद आना चाहिए अभी घर जाना है बाकी थोड़ा समय है। भविष्य के लिए अभी बाप को याद करना है। तुमको कोई योग आदि से छोड़ ही जाना है। जानते हो 84 जन्म पूरे हुए। अभी घर जाना है। यह प्रैक्टीस डालनी है। धंधे भी करना है। तब तो कहा जाता है गृहस्थ व्यवहार में रहते हुये। यह ट्रेन्ड हो जायें। अभी घर जाना है। घर क्यों भूलते हो। समझ मिल गई है अभी घर जाना है। याद की कमाई बहुत भारी है। तो क्यों भूलना चाहिए। बहुत हैं जो समझते होंगे बरोबर उस युक्ति से हम याद नहीं करते हैं। जो विकर्म विनाश हो। योगेश्वर बच्चों को योग सिखलाते हैं। अपने साथ योग सिखलाते हैं। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप का दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

*:****:*